# राँची जिला में पर्यटन की संभावनायें एवं समस्याएं : एक भौगोलिक विशलेषण

भूगोल विषय की पी०एच०डी० उपाधि के पंजीकरण हेतु शोध प्रारूप

(सामाजिक विज्ञान संकाय)

राँची विश्वविद्यालय, राँची

स्नातकोत्तर भूगोल विभाग

राँची विश्वविद्यालय, राँची

2023


**शोध निर्देशिका**

डॉ० शशिकांता टोप्पो

सहायक प्रोफेसर

भूगोल विभाग

राँची महिला महाविद्यालय, राँची

**शोधार्थी**

आदित्य कुमार

MA. – GEOGRAPHY

U.G.C. NET Dec 20-June 21

# राँची जिला में पर्यटन की संभावनाएं एवं समस्याएं : एक भौगोलिक विशलेषण

## 1. <u>संक्षिप्त परिचय</u>

पर्यटन एक ऐसी यात्रा है जो मनोरंजन या फुर्सत के क्षणों का आनंद उठाने के उद्देश्यों से की जाती है। विश्व पर्यटन संगठन (world tourism organisation) के अनुसार पर्यटक वे लोग हैं जो “यात्रा करके अपने सामान्य वातावरण से बाहर के स्थानों में रहने जाते हैं, यह दौरा ज्यादा से ज्यादा एक साल के लिए मनोरंजन, व्यापार, अन्य उद्देश्यों से किया जाता है, यह उस स्थान पर किसी खास क्रिया से संबंधित नहीं होता है।” पर्यटन की प्रक्रिया भौगोलिक क्षेत्र और समय दोनों से संबंधित होने के कारण यह भूगोलवेत्ताओं के मध्य एक उचित स्थान बनाता जा रहा है। वस्तुतः ऐसे कई देश हैं जहां पर्यटन क्रिया व्यवस्थित होकर एक उद्योग के रूप में स्थापित हो चुकी है। पर्यटन की प्रकृति बहुविषयक होने के कारण इसका महत्व दिनोंदिन बढ़ता जा रहा है। भारत में पर्यटन के क्षेत्र में स्वतंत्रताप्राप्ति के बाद से ही विकास देखा जा रहा है। इसके तहत वस्तु और सेवा दोनों की बिक्री की जाती है। वर्तमान में पर्यटन की कई सारी शाखाओं का विकास हो चुका है। वस्तुतः इसमें धार्मिक पर्यटन, चिकित्सा पर्यटन, शिक्षा पर्यटन, पारिस्थितिक पर्यटन, अंतरिक्ष पर्यटन, तथा अन्य शामिल हैं।

पर्यटन का संबंध काफी हद तक किसी क्षेत्र के स्थानीय लोगों से भी होता है। अतः इसके नकारात्मक और सकारात्मक दोनों तरह के प्रभाव स्थानीय समाज और पर्यटकीय कार्य से जुड़े लोगों तथा उस भौगोलिक क्षेत्र पर पड़ता है। वर्तमान मे पर्यटन उद्योग का उचित प्रबंधन और विनियमन न हो पाने के कारण कई प्रकार की समसयाओं का जन्म हो गया है, जैसे पर्यावरणीय प्रदूषण जिसमें

वायु प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण तथा जल प्रदूषण शामिल हैं। पर्यटन स्थल का भौतिक क्षरण, यातायात समस्याएं, आवास क्षरण तथा वन्य जीवों को नुकसान, अनुचित पर्यटन से उत्पन्न अन्य समस्याएं हैं। अतः पर्यटन को उचित प्रबंधन और विनियमन प्रदान करने से यह कई प्रकार के संभावनाओं को जन्म देगा। इसमें स्थानीय लोगों को रोजगार की प्राप्ति, भौगोलिक स्थलों का संरक्षण, पारिस्थितिक एवं जैव-विविधता का संरक्षण, संस्कृतियों का मेल मिलाप, अच्छे अवसंरचनाओं का निर्माण तथा एक सुनियोजित सेवा उद्योग की स्थापना शामिल हैं।

प्रस्तुत शोध में राँची जिला में स्थित पर्यटन स्थलों की संभावनाओं एवं समस्याओं की जांच की जाएगी। इसके अंतर्गत यह देखा जाएगा की राँची जिला मे पर्यटन कार्य के कारण यहाँ के भौगोलिक परिदृश्य, समाज, पर्यावरण, तथा अर्थव्यवस्था पर क्या प्रभाव पड़ रहा है? प्रस्तुत शोध मे पर्यटन से संबंधित चुनौतियों तथा भविष्य की रणनीतियों पर भी चर्चा किया जाएगा और नीति निर्माण मे सहयोग किया जाएगा।

<u>अध्ययन क्षेत्र का भौगोलिक विवरण</u>

राँची की अवस्थिति पृथ्वी के उत्तरी गोलार्ध में है। यह झारखंड राज्य की राजधानी के रूप में स्थापित है, जो पूर्वी भारत मे स्थित है। वस्तुतः राँची का अक्षांश और देशान्तर का विस्तार क्रमशः 22°30’-23°36’ उत्तर तथा 84°54’-85°54’ पूर्व है। समुद्रतल से इसकी ऊंचाई 641 मी० है, इसका कुल क्षेत्रफल 5097 वर्ग किमी है। यहाँ की जनगणना 29,14,253 (जनगणना 2011) है, राँची को प्रशासनिक रूप से 2 उपमंडलों क्रमशः राँची और बुंडू में विभाजित किया गया है। राँची जिला दक्षिणी छोटानागपुर प्रमंडल का एक हिस्सा है। राँची भारत के अन्य शहरों से यातायात के साधनों जैसे सड़क मार्ग, रेलमार्ग, तथा वायुमार्ग से जुड़ा हुआ है, जो इसे यहाँ के पर्यटन उद्योग को अन्य भारतीय नगरों से जोड़ता है। राँची मे घरेलू और विदेशी दोनों पर्यटकों का आगमन देखा गया है। अतः यहाँ का पर्यटन एक विकसित उद्योग के रूप में स्थापित होने के लिए तैयार है। राँची की भू-भौतिकी संरचना पठारीय है, जो पत प्रदेश

के निकट अवस्थित है। फलतः यहाँ कई प्रकार के प्राकृतिक तथा मानव निर्मित पर्यटन स्थलों का विकास हुआ है। इनमें दशम जलप्रपात, हुंडरू जलप्रपात, जोन्हा जलप्रपात, पतरातु घाटी क्षेत्र, रिची बुरु, टैगोर हिल तथा माराशिली पहाड़ आदि शामिल हैं। इसके अतिरिक्त रांची में धार्मिक पर्यटन स्थल जैसे पहाड़ी मंदिर, दिउड़ी मंदिर, जगन्नाथ मंदिर, जैन मंदिर, सूर्य मंदिर तथा इस्कॉन टैंपल आदि, चिकित्सा पर्यटन स्थल के रूप में रिनपास, रिम्स, मेदांता तथा अपोलो जैसे अस्पताल स्थित हैं, शिक्षा पर्यटन के रूप में बिरला इंस्टिट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी, मेसरा, भारतीय प्रबंधन संस्थान, XISS तथा कई विश्वविद्यालय भी अवस्थित हैं जिसमें भारत और झारखंड के कोने कोने से छात्र पढ़ने आते हैं, यहाँ मानव निर्मित पर्यटन स्थलों का भी विकास किया गया है, जिसमें बिरसा जैविक उद्यान, गेतलसूद जलाशय, धुर्वा जलाशय तथा कांके जलाशय अवस्थित है। ये सभी घटक मिलकर राँची जिला को एक आकर्षक पर्यटन स्थल के रूप में स्थापित करने मे सहायता प्रदान करते हैं।

## 2. <u>अद्यतन स्थिति</u>

पर्यटन न केवल एकीकृत सतत विकास के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए आवश्यक है, बल्कि यह स्थानीय लोगों के लिए पर्याप्त आर्थिक अवसर भी उपलब्ध कराता है। फलतः पर्यटन के कार्य में प्रकृति का संरक्षण भी संभव हो पाता है। हालांकि पर्यटकों की बढ़ती भीड़, अनियमित पर्यटन क्रियाएं, प्रदूषण, अस्वच्छता तथा विनियमन के अभाव में पर्यटन के कुछ उद्देश्य प्राप्त नहीं हो पाते हैं।

भारत में पर्यटन उद्योग को उचित आकार प्रदान करने हेतु सरकार समय-समय पर पर्यटन नीतियाँ लाते रही है। साथ ही झारखंड में भी पर्यटन नीति को लागू किया गया है। पर्यटन भूगोल के क्षेत्र में कई शोधार्थी

विभिन्न दृष्टिकोणों से अनुसंधान कार्य करते रहे हैं। उदाहरण के लिए उत्तर प्रदेश के गोंडा जिला में शोध किया गया, पश्चिम बंगाल के सागर द्वीप को लेकर शोध किया गया, जम्मू कश्मीर के विभिन्न क्षेत्रों में, हिमाचल प्रदेश तथा उत्तराखंड के कई क्षेत्रों में पर्यटन को लेकर अनुसंधान किए गए हैं। झारखंड मे भी पर्यटन मे अनुसंधान कार्य किए गए हैं, जिसमें प्रधान राशानन्द द्वारा 1987 ई० में किया गया 'Geography of Tourism: A Case Study of Orissa', हलधर लक्ष्मी द्वारा 1981 ई० किया गया 'Geography of Tourism in India' शामिल है। इसके अतिरिक्त दलमा वन्यजीव अभ्यारण्य विषय पर बोदरा बरखा द्वारा तथा एक अन्य शीर्षक 'Tribal Cultural Diversity and Tourism Development in Jharkhand State' पर महतो निहारिका द्वारा अनुसंधान कार्य किया जा रहा है। इस क्षेत्र मे किए जा रहे ये अनुसंधान कार्य पर्याप्त प्रतीत नहीं होते हैं। वस्तुतः प्रस्तुत शोध कार्य के द्वारा शोधार्थी इसी रिक्त स्थान की भरपाई करने की कोशिश करेगा।

## 3. <u>अनुसंधान की जाने वाली समस्या</u>

प्रस्तावित अनुसंधान कार्य वर्तमान में देखी जा रही कई समस्याओं को उजागर कर उनके लिए आवश्यक समाधान ढूँढने व नीति निर्माण में सहयोग प्रदान करने की कोशिश करेगा। इस शोध में राँची की जनसंख्या को स्थानीय तौर पर रोजगार का न मिलना, पर्यटकों की बढ़ती जनसंख्या तथा भीड़-भाड़ वाली पर्यटन कार्यों से हो रही पर्यावरणीय नुकसान, जलवायु परिवर्तन का पर्यटन पर नकारात्मक

प्रभाव, आवास क्षरण तथा इनके कारण पड़ने वाली समग्र आर्थिक व भौगोलिक प्रभावों जैसी समस्याओं की जांच की जाएगी। पर्यटन का प्रभाव जनजातीय संस्कृति पर भी पड़ता है। अतः इस अनुसंधान में संस्कृतियों के संक्रमण से उत्पन्न समस्याओं की भी जाँच की जाएगी व आवश्यक नीति का निर्माण करने में सहायता किया जाएगा।

## 4. अनुसंधान के उद्देश्य

पर्यटन प्राकृतिक एवं मानव निर्मित दोनों पर आधारित होती है। फलतः इसमें प्रकृति का संरक्षण करने के साथ-साथ स्थानीय समाज के व्यक्तियों को रोजगार के विकल्प भी प्रदान किए जाते हैं। वस्तुतः स्थानीय समाज का सतत विकास संभव हो पाता है। 'पर्यटन' को शोध के विषय के रूप में चयन करने के पीछे निम्न उद्देश्य हैं:-

(क) रांची जिला में पर्यटन से उत्पन्न विभिन्न समस्याओं का अध्ययन करना।

(ख) रांची जिला में पर्यटन उद्योग के विकास की संभावनाओं की जांच करना।

(ग) रांची जिला के पर्यटन स्थलों पर विशिष्ट सुविधाओं के उपलब्धता की जांच करना।

(घ) रांची जिला में पर्यटन योग्य मानव संसाधन के विकास के स्तर के बारे में अध्ययन करना।

(ङ) पर्यटन के कारण रांची के जैव-विविधता पर पड़ने वाले प्रभावों के बारे में अध्ययन करना।

## 5. शोध परिकल्पना

राँची में स्थित विभिन्न पर्यटन स्थल प्रकृति के नजदीक अवस्थित हैं, और ये अत्यंत तीव्र गति से पर्यटन कार्यों के लिए खोले जा रहे हैं। ऐसे में इन क्षेत्रों में पर्यटन का अनियमित विकास जारी है, जो न केवल रोजगार के उपलब्धता को

प्रभावित कर रहे हैं बल्कि इससे पर्यावरण के साथ-साथ भौतिक परिदृश्य को भी नुकसान हो रहा है। प्रस्तावित शोध के लिए निर्मित परिकल्पनाएं, शोध समस्याओं के अनुरूप है, जो निम्न हैं:-

- शून्य परिकल्पना है कि राँची जिला में अवस्थित पर्यटन स्थल सुनियोजित नीति तथा विनियमन के अभाव में पर्यावरणीय प्रदूषण का कारण बन रहे हैं।
- शून्य परिकल्पना है कि रांची में पर्यटन उद्योग के विकास की सम्भावना में वृद्धि से स्थानीय लोगों को सतत रोजगार की प्राप्ति होगी।
- शून्य परिकल्पना है कि रांची का पर्यटन उद्योग यहाँ के स्थानीय समाज को प्रभावित कर रहा है।
- शून्य परिकल्पना है कि सुनियोजित पर्यटन उद्योग के विकास होने से यह जलवायु परिवर्तन के विरुद्ध लड़ाई में योगदान प्रदान करेगा।

उपरोक्त सभी परिकल्पनाओं की जाँच शोध के दौरान आगे के अध्यायों में

की जाएगी।

## 6. अनुसंधान की रूपरेखा

प्रस्तावित अनुसंधान कार्य का मुख्य उद्देश्य राँची को झारखंड राज्य में पर्यटन के एक आदर्श स्थल के रूप में स्थापित करना है। राँची एक ऐसा क्षेत्र है जहां जैव-विविधता तथा सांस्कृतिक विविधता दोनों देखी जाती है, साथ ही पर्यटन के स्थल में भी काफी विविधता उपलब्ध है। इस शोध के लिए निम्न शोध तंत्र का उपयोग किया जाएगा।

- शोध क्षेत्र में पर्यटन की संभावना की जांच के लिए swot (strength, weaknesses, opportunities, threats) तकनीक का उपयोग किया जाएगा।
- एकत्रित किए गए प्राथमिक एवं द्वितीयक आंकड़ों को ग्राफ, वैन-डायग्राम, माध्य, मध्यमिका, आलेख, तथा उपयुक्त सांख्यिकी विधियों का उपयोग कर उनका विश्लेषण किया जाएगा।
- प्राथमिक आंकड़ों के लिए प्रतिदर्श विधि, प्रश्नावली, साक्षात्कार तथा क्षेत्र निरीक्षण विधि का उपयोग किया जाएगा। इसके लिए प्रतिदर्श की इकाई 12 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों का विभिन्न कालखंड में प्रश्नावली के माध्यम से पर्यटन स्थल के बारे में सूचना प्राप्त किया जाएगा।
- राँची के कुछ पर्यटन स्थल जैसे जोन्हा जलप्रपात, दशम जलप्रपात, दिउड़ी मंदिर, पतरातु घाटी क्षेत्र आदि ग्रामीण इलाकों में बसे हैं। अतः उन स्थलों के ग्रामीणों से परिवार के स्तर पर आँकड़े इकट्ठा कर पर्यटन के प्रभावों, समस्याओं और संभावनाओं की जांच की जाएगी। ऐसे प्रत्येक गाँव से 20 परिवारों का जो 3 विभिन्न पर्यटन स्थलों के नजदीक आवासित हैं, उनसे आँकड़े इकट्ठे किए जाएंगे।
- पर्यटन स्थलों के बारे में बताने के दौरान यथोचित मानचित्रों का भी उपयोग किया जाएगा।

7. **<u>आंकड़ों के स्रोत तथा संग्रहण के उपकरण</u>**

शोध के दौरान आंकड़ों के स्रोत के रूप में प्राथमिक व द्वितीयक दोनों प्रकार के आंकड़ा स्रोतों का उपयोग किया जाएगा। प्राथमिक आंकड़ा स्रोत के तहत पर्यटन क्षेत्र से संबंधित प्रसिद्ध व्यक्तित्व वाले व्यक्तियों का साक्षात्कार किया जाएगा। प्रश्नावली तथा प्रतिदर्श अध्ययन जैसे शोध विधितंत्र का उपयोग कर आँकड़े एकत्रित किए जाएंगे।

द्वितीयक आंकड़ा स्रोत के रूप में पर्यटन विभाग, आर्थिक विभाग, झारखंड सरकार द्वारा जारी प्रपत्रों, सूचनाओं, आर्थिक सर्वेक्षण तथा बजट और अन्य महत्वपूर्ण पुस्तकों, सर्वेक्षण आदि का उपयोग किया जाएगा। इसके साथ ही भारत सरकार के पर्यटन मंत्रालय तथा आर्थिक मामलों के मंत्रालय द्वारा जारी आंकड़ों का भी उपयोग किया जाएगा।

## 8. अध्यायीकरण

अनुसंधान कार्य को व्यावहारिक रूप तथा सरल बनाने हेतु आवश्यक संभाव्य अध्याय निम्नलिखित हैं:-

पहला अध्याय - भौगोलिक पृष्ठभूमि

दूसरा अध्याय - राँची जिला में अवस्थित विभिन्न प्रकार के पर्यटन स्थल

तीसरा अध्याय - राँची जिला में पर्यटन के कारण उत्पन्न समस्याएं

चौथा अध्याय - राँची के स्थानीय लोगों पर पर्यटन का सामाजिक-आर्थिक प्रभाव

पांचवां अध्याय - राँची के जैव विविधता पर पर्यटन का प्रभाव

छठा अध्याय - राँची जिला के तीन पर्यटन स्थलों का प्रतिदर्श अध्ययन

सातवाँ अध्याय - राँची में पर्यटन की संभावना एवं नीति निर्माण

निष्कर्ष

सन्दर्भ सूची

परिशिष्ट

## 9. अध्ययन का महत्व एवं प्रासंगिकता

पर्यटन को हरित उद्योग की संज्ञा दी जाती है, क्योंकि इस उद्योग से किसी प्रकार के कार्बन का उत्सर्जन नहीं होता है। अतः वर्तमान विश्व जहां जलवायु

परिवर्तन से लड़ाई के उपाय ढूंढ रहा है, उस दिशा में पर्यटन का सुनियोजित विकास एक अहम योगदान दे सकता है। यहाँ तक कि पारिस्थितिक पर्यटन को अधिक विकसित करने पर वह अतिरिक्त कार्बन सिंक के रूप में भी कार्य कर सकता है।

पर्यटन भूगोल का महत्व वहाँ और बढ़ जाता है जहां स्थानीय लोगों को स्वस्थाने रोजगार की कमी हो। वस्तुतः पर्यटन स्थानीय लोगों को रोजगार के अवसर प्रदान करता है। 2019 में, भारत का पर्यटन क्षेत्र 79.86 मिलियन रोजगारों (प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रोजगार) के लिए उत्तरदायी रहा। भारत के कुल रोज़गार में पर्यटन क्षेत्र का योगदान 8.78% है। 2027 तक भारत का पर्यटन बाजार 125 अरब डॉलर तक पहुंचने की संभावना है। (स्रोत ABP News)

झारखंड में भी सरकार ने 'झारखंड पर्यटन नीति - 2021' लागू किया है, जो पर्यटन उद्योग के बढ़ते महत्व और प्रासंगिकता को बताता है। अतः पर्यटन भूगोल में शोध कार्य एक फलदायी क्रिया होगी।

## 10. <u>मौज़ूदा ज्ञान में योगदान</u>

पर्यटन क्रिया हरित उद्योग का हिस्सा है। वस्तुतः इससे स्थानीय वातावरण का संरक्षण भी संभव हो पाता है। यह ग्रिफिथ टेलर महोदय के 'नव-नियतिवाद' की संकल्पना को साकार बनाता है। आज मनुष्य जिस प्रकार प्रकृति व पर्यावरण का विकास के नाम पर अंधाधुंध दोहन कर रहा है, इससे जाहिर है कि आने वाले निकट भविष्य में इसके नकारात्मक प्रभाव दिखाई देंगे। अतीत में ऐसी कई दुर्घटनाएं एवं त्रासदियाँ देखी गई है, जैसे 2013 का 'केदारनाथ प्रलय' , 2004 की 'सुनामी' तथा नेपाल में भीषण भूकंप आदि। यह वर्तमान समय में भी घट रही है, जैसे जोशीमठ का धँसाव, धनबाद की भूमिगत अग्नि, झारखंड मे हो रही अनियमित वर्षण

के कारण कुछ क्षेत्रों में सूखे की स्थिति और हिमाचल के कुल्लू-मनाली में आया बाढ़ आदि। इसमें से कई घटनाओं का संबंध जलवायु परिवर्तन से है, जो मनुष्यों के अनियमित विकास के फलस्वरूप और भी तीव्र गति से परिवर्तित हो रही है। ऐसे में टेलर महोदय द्वारा सुझाया गया अवधारणा 'नव-नियतिवाद' ही काम आएगा। मनुष्य 'रुक के सोचे' तथा उपलब्ध विकल्पों पर विचार कर उस विकल्प का चयन करे जो समस्त प्राणिजगत के साथ-साथ पृथ्वी की सतत्ता के लिए सुयोग्य हो। पर्यटन भूगोल पर शोध करने से 'नव-नियतिवाद' की संकल्पना को और मजबूती प्रदान होगी।

## 11. <u>भविष्य का कार्य</u>

'वर्तमान का अनुसंधान, भविष्य का संसाधन होता है।' यह कथन किसी भी शोध कार्य के लिए उपयुक्त है। राँची जिला में पर्यटन पर यह शोध कार्य भविष्य में पर्यटन के क्षेत्र में संभावनाओं को तलाशने की एक कोशिश है। यह शोध कार्य भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए एक मार्ग-दर्शन प्रदान करने की क्षमता रखेगा। इसके साथ ही इस अनुसंधान से प्राप्त होने वाला निष्कर्ष व उत्पाद आने वाली सरकारों द्वारा अपने नीति-निर्माण में उपयोग कर पाने में भी सक्षम रहेगा। राँची जिला में पर्यटन को सुविकसित तथा सुनियोजित उद्योग के रूप में स्थापित करने में भी योगदान दे सकेगा।

## 12. संबंधित संदर्भ सूची


- अग्रवाल, अरुण & श्रीवास्तव, स्वाति (2022) : 'झारखण्ड सार संग्रह', उड़ान पब्लिकेशन, रांची, 9वां संस्करण, पृ.सं.- 554, 555, 556
- चौधरी, अखिलानंद (2010) : 'झारखंड राज्य में पर्यटन स्थलों का भौगोलिक अध्ययन' शोध गंगा पृ.सं.- 49, 54
- तिवारी, राम कुमार (2010) : 'झारखण्ड की रुपरेखा' शिवांगन पब्लिकेशन, रांची, 3रा संस्करण, पृ.सं.- 427, 450, 451
- हुसैन, माजिद (2004) : 'भौगोलिक चिंतन का विकास', रावत प्रकाशन, जयपुर, पृ.सं.- 229
- Singh, L. K. (2008) : Ecology Environment and Tourism, ISHA Books, Delhi, pg.- 01 to 50
- William, Stephen (2009) : 'Tourism Geography A New Synthesis', pg.- 4, 5, 6, 109, 110, 111
- Angad, A. (2020) : Jharkhand's New Tourism Policy: Focus on religious, adventure destinations, tribal culture, The Indian Express
- Govt. of Jharkhand : Jharkhand tourism policy 2021, (2022), Department of tourism, arts, culture, sports & youth affairs
- Jharkhand to develop eco-tourism destinations, (2020), The Pioneer
- पर्यटन विभाग, वित्त विभाग, झारखंड सरकार